March 2024

Monthly Magazine
Year 10 Issue 3

# Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

*In Giving We Believe*

# सत्युग

NARAYAN REIKI IN GIVING WE BELIEVE

IN GIVING WE BELIEVE

## हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

### बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रात ११ बजे से ११.३० बजे तक

### फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

# नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

॥ 卐 ॥

# पावन वाणी

**प्रिय नारायण प्रेमियों,**

**॥ नारायण नारायण ॥**

कथनी और करनी की समानता हमारे व्यक्तित्व को एक सुंदर आयाम देती है । भीड़ में एक अलग पहचान देती है और हमारे जीवन को सार्थकता प्रदान करती है । इस संदर्भ में मुझे गांधी जी का यह प्रसंग बहुत अधिक प्रेरणादायक लगता है -

एक बार गांधीजी से कोई व्यक्ति यह पूछने गया कि बापूजी 'गुड़ कैसे छोड़ा जा सकता है ?'

उस पर गांधीजी ने उसे कहा इस सवाल का जवाब मैं तुम्हें दो दिन के बाद दूँगा । तुम 2 दिन बाद आना ।

वह व्यक्ति वहाँ से चला गया और दो दिन बाद फिर से बापू से मिलने आया । उस दिन गांधीजी ने कहा कि तुम पूरे विश्वास और अनुशासन के साथ गुड़ न खाने का प्रण लो ।

इस बात पर वह व्यक्ति क्रोधित हुआ और बोला यह वाक्य तो आप उस दिन भी बोल सकते थे ? इसके लिए आपने मुझे आज क्यों बुलाया ?

उस पर गांधीजी ने बड़ी ही विनम्रता से कहा,'वो इसलिए क्योंकि उस दिन तक मैं स्वयं भी गुड़ खाता था तो मेरा तुम्हें कुछ भी कहना उचित नहीं होता । उस दिन के बाद से मैंने पहले स्वयं पर काम किया और गुड़ खाना छोड़ा और इसलिए आज तुम्हें भी मैं पूरे विश्वास के साथ यह कह सकता हूँ कि यदि मैं कर सकता हूँ तो तुम भी अवश्य कर सकते हो ।

**महात्मा गांधी** को उनके **'कथनी और करनी में समानता'** के इसी गुण के कारण इतना मान सम्मान मिलता है, और **राष्ट्रपिता का दर्जा** भी दिया जाता है ।

सदैव कथनी और करनी में समानता न केवल हमें ऊँचाइयों पर ले जाती है बल्कि हमारे मनुष्य होने को भी सार्थकता प्रदान करती है ।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-
**संध्या गुप्ता**
09820122502
-: प्रधान कार्यालय :-
नारायण भवन
टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़
गोरेगांव वेस्ट, मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

| | | |
|---|---|---|
| अहमदाबाद | जैविनी शाह | 9712945552 |
| अकोला | शोभा अग्रवाल | 9423102461 |
| अकोला | रिया अग्रवाल | 9075322783 |
| अमरावती | तरुलता अग्रवाल | 9422855590 |
| औरंगाबाद | माधुरी धानुका | 7040666999 |
| बैंगलोर | कनिष्का पोद्दार | 7045724921 |
| बैंगलोर | शुभांगीं अग्रवाल | 9327784837 |
| बैंगलोर | शुभांगी अग्रवाल | 9341402211 |
| बस्ती | पूनम गाड़िया | 9839582411 |
| बिहार | पूनम दूधानी | 9431160611 |
| भीलवाड़ा | रेखा चौधरी | 8947036241 |
| भोपाल | रेनू गट्टानी | 9826377979 |
| चेन्नई | निर्मला चौधरी | 9380111170 |
| दिल्ली ( नोएडा ) | तरुण चण्डक | 9560338327 |
| दिल्ली ( नोएडा ) | मेघा गुप्ता | 9968696600 |
| दिल्ली ( डब्ल्यू ) | रेनु विज | 9899277422 |
| धूलिया | रेणु भटवाल | 878571680 |
| गोंदिया | राधिका अग्रवाल | 9326811588 |
| गोहटी | सरला लाहोटी | 9435042637 |
| हैदराबाद | स्नेहलता केडिया | 9247819681 |
| इंदौर | धनश्री शिरालकर | 9324799502 |
| जालना | रजनी अग्रवाल | 8888882666 |
| जलगांव | काला अग्रवाल | 9325038277 |
| जयपुर | प्रीति शर्मा | 9461046537 |
| जयपुर | सुनीता शर्मा | 8949357310 |
| झुनझुनू | पुष्पा देवी टिबेरेवाल | 9694966254 |
| इचलकरंजी | जय प्रकाश गोयनका | 9422043578 |
| कोल्हापुर | राधिका कुमटेकर | 9518980632 |
| कोलकत्ता | स्वेटा केडिया | 9831543533 |
| कानपुर | नीलम अग्रवाल | 9956359597 |
| लातूर | ज्योति भूतड़ा | 9657656991 |
| मालेगांव | रेखा गारोडिया | 9595659042 |
| मालेगांव | आरती चौधरी | 9673519641 |
| मोरबी | कल्पना चोरौड़िया | 8469927279 |
| नागपुर | सुधा अग्रवाल | 9373101818 |
| नांदेड़ | चेदा काबरा | 9422415436 |
| नवलगढ़ | ममता सिंग्रोडिया | 9460844144 |
| नासिक | सुनीता अग्रवाल | 9892344435 |
| पुणे | आभा चौधरी | 9373161261 |
| पटना | अरबिंद कुमार | 9422126725 |
| पुरुलिया | मृदु राठी | 9434012619 |
| परतवाड़ा | राखी मनीष अग्रवाल | 9763263911 |
| रायपुर | अदिति अग्रवाल | 7898588999 |
| रांची | आनंद चौधरी | 9431115477 |
| सूरत | रंजना अग्रवाल | 9328199171 |
| सांगली | हेमा मंत्री | 9403571677 |
| सिकर ( राजस्थान ) | सुषमा अग्रवाल | 9320066700 |
| श्री गंगानगर | मधु त्रिवेदी | 9468881560 |
| सतारा | नीलम कदम | 9923557133 |
| शोलापुर | सुवर्णा बलदवा | 9561414443 |
| सिलीगुड़ी | आकांक्षा मुधरा | 9564025556 |
| टाटा नगर | उमा अग्रवाल | 9642556770 |
| राउरकेला | उमा अग्रवाल | 9776890000 |
| उदयपुर | गुणवंती गोयल | 9223563020 |
| उबली | पल्लवी मलानी | 9901382572 |
| वाराणसी | अनीता भालोटिया | 9918388543 |
| विजयवाड़ा | किरण डूँवर | 9703933740 |
| वर्धा | रूपा सिंघानिया | 9833538222 |
| विशाखापतनम | मंजू गुप्ता | 9848936660 |

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

| | | |
|---|---|---|
| ऑस्ट्रेलिया | रंजना मोदी | 61470045681 |
| दुबई | विमला पोद्दार | +971528371106 |
| काठमांडू | रिचा केडिया | +977985-1132261 |
| सिंगापुर | पूजा गुप्ता | 6591454445 |
| शारजाह | शिल्पा मंजरे | +971501752655 |
| बैंकॉक | गायत्री अग्रवाल | 66952479920 |
| विराटनगर | मंजू अग्रवाल | +977980-2792005 |
| विराटनगर | वंदना गोयल | +977984-2377821 |

॥ 卐 ॥

## संपादकीय

**प्रिय पाठकों,**

**॥ नारायण नारायण ॥**

पिछले दिनों, वॉक करते समय पास चल रही सहेलियों का वार्तालाप कानों में पड़ा जिसने टीम सतयुग को दे दिया एक नया विषय ।

वो आपस में किसी तीसरी पड़ोसन के बारे में बातें कर रही थीं जो अभी - अभी उनकी बिल्डिंग में नई - नई आई थी । उन दोनों का कहना था कि नई पड़ोसन कुछ विचित्र सी है, उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता । वो कहती कुछ है और करती कुछ है । इसके बाद दोनों न जाने कितनी देर बात करती रहीं । नकारात्मकता से बचने के लिए मैंने अपनी वॉक की स्पीड तेज कर दी । पर मन ही मन उन दो सहेलियों का शुक्रिया किया जिन्होंने हमें हमारी पत्रिका के लिए चिंतन और मनन करने का एक विषय दे दिया- कथनी और करनी की समानता।

आप सभी सदैव कथनी और करनी की समानता का पालन करेंगे ।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित-

**आपकी अपनी**
**संध्या गुप्ता**

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

| | | |
|---|---|---|
| नेपाल | रिचा केडिया | 977985-1132261 |
| आस्ट्रेलिया | रंजना मोदी | 61470045681 |
| बैंकाक | गायत्री अग्रवाल | 66897604198 |
| कनाडा | पूजा आनंद | 14168547020 |
| दुबई | विमला पोद्दार | 971528371106 |
| शारजहा | शिल्पा मांजरे | 971501752655 |
| जकार्ता | अपेक्षा जोगनी | 9324889800 |
| लन्दन | सी.ए. अक्षता अग्रवाल | 447828015548 |
| सिंगापुर | पूजा गुप्ता | 6591454445 |
| डबलिनओहियो अमेरिका | स्नेह नारायण अग्रवाल | 1-614-787-3341 |

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये।आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net
narayanreikisatsangparivar
@narayanreiki

**प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार**
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

||नारायण नारायण||

'अपनी कथनी पर खरे उतरें अब वो किरदार नहीं मिलते मैं मुकरना भी चाहूँ मुझे अल्फ़ाज़ नहीं मिलते'।

कथनी और करनी की समानता जीवन जीने का सर्वोत्तम अन्दाज़ है । हमारे भीतर की यह विशेषता ही हमें जीवन में उन्नति, प्रगति, सफलता दिलाती है और समाज में एक दृढ़ स्थान दिलाती है। आइये पहले कथनी और करनी के व्यापक अर्थ समझते हैं :-

कथनी और करनी, दोनों ही कार्य को व्यक्त करने के दो अलग-अलग तरीके हैं । कथनी में हम वचन या विचारों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते हैं, जबकि करनी में हम उन विचारों को क्रियाओं या कार्यों में परिणत करते हैं ।

लेकिन, यहाँ भी कुछ अंतर है । कथनी समय-समय पर जारी रहती है, जबकि करनी एक समय-सीमित क्रिया होती है। कथनी में हम अक्सर वाद-विवाद करते हैं, विचारों का प्रस्तुतिकरण करते हैं, या किसी को बताते हैं, जबकि करनी में हम वास्तविक कार्यों को करते हैं । इसी प्रकार, कथनी में हम अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं, जबकि करनी में हम अपने कार्यों से अपने विचारों को साकार करते हैं ।

कथनी और करनी दोनों ही सामाजिक और व्यक्तिगत संचार के महत्वपूर्ण तत्व हैं। इन दोनों की समानता को समझने के लिए, हमें इनके प्रति विस्तृत जानकारी की आवश्यकता होती है।

**कथनी**

कथनी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का माध्यम होती है, जिसमें हम अपनी धारणाओं, और विचारों को शब्दों के माध्यम से साझा करते हैं।

संवादः-कथनी में संवाद का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जिसमें व्यक्तिगत या सामाजिक संवाद के माध्यम से विचारों को प्रस्तुत किया जाता है।

**करनी**

कार्यों का प्रदर्शनः करनी में हम अपने विचारों और धारणाओं को कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं।

सक्रियता और समर्पणः- करनी हमें सक्रिय और समर्पित बनाती है, क्योंकि यह हमें अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यशील बनाती है।

प्रभावी क्रियायें वास्तविकता में परिणत होती हैं और हमारे प्रभावी कार्यों के माध्यम से अपने लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करती हैं ।

कथनी और करनी दोनों ही हमारे संवादनात्मक और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण हैं। जब हम दूसरों के साथ बातचीत करते हैं, तो हम कथनी कर रहे होते हैं, और जब हम अपने कथनों को कार्य में परिणत करते हैं, तो हम करनी कर रहे होते हैं। दोनों का संतुलन हमारे संबंधों को मजबूत बनाता है और हमें समाज में सही रास्ते पर ले जाता है ।

एक फ्रांसीसी कहावत है, 'सोचो चाहे जो कुछ, पर कहो वही जो तुम कर सकते हो या करने जा रहे हो'। जो व्यक्ति मन से, वचन से, कर्म से एक जैसा हो वह ही सच्चा महात्मा माना जाता है जैसे कि राज दीदी । दीदी संबंधों की दृढ़ता पर बात करती हैं तो वह रिश्तों को दृढ़ बनाने के लिए उतने ही प्रयत्न भी करती हैं । रिश्तों के चलते उनकी एक विशेष

बात, कि अपने दोनों परिवारों - मोदी परिवार और एन आर एस पी परिवार दोनों के हर सदस्य को वह एक समान धरातल पर रख कर ही प्यार, आदर, सम्मान देती हैं । कार्य देते समय भी वह कार्यकर्ता की क्षमता तो देखती ही हैं, उनका हर संभव प्रयास रहता है कि हर स्वयं सेवक को बराबर का मौक़ा मिले । इसके लिए यदि कभी कोई दुविधा की स्थिति आती है तो उससे बाहर निकलने के लिए वह वर्षों से नारायण भवन में चिट निकाल कर नारायण के आदेश के अनुसार कार्य करती हैं। इतनी ईमानदारी वह स्वयं बरतती हैं इसलिए वह सतसंगियों को ईमानदार, वफ़ादार रहने का आग्रह कर पाती हैं । दीदी हमेशा कहती हैं 'धीमा, मधुर और सकारात्मक ही बोलें'। आज सतसंग से जुड़े इतना लंबा अरसा हो गया, मैंने दीदी को हमेशा धीमा, मधुर और सकारात्मक बोलते ही देखा है । इस बात के गवाह विश्व भर में फैले सतसंगी भी हैं । विश्व भर में जितने भी प्रसिद्ध ज्ञानी, ध्यानी हुए जिन्होंने एक सार्थक जीवन जिया उन सबकी कथनी और करनी सदैव समान रही है ।

सम कथनी और करनी को अमृत समान उत्तम माना गया है । कार्य करते समय हम कार्य को एक स्वरूप प्रदान करते हैं । 'काल करे सो आज कर, आज करै सो अब' हमें कार्य कुशलता का संदेश देता है । राज दीदी भी कहती हैं, 'जैसे ही आपके मन में कोई शुभ विचार आये उसे कर्म में तुरंत ही परिवर्तित कर दो क्योंकि कथनी करनी सदैव ही समान होनी चाहिए । कथनी और करनी में सामंजस्य ही आत्म सुधार का श्रेष्ठ उपाय है।'

कथनी और करनी की समानता से हमें कई लाभ मिलते हैं। यहाँ कुछ मुख्य लाभ हैं:

कथनी और करनी दोनों का संतुलन हमें स्पष्टता और आत्मविश्वास दिलाने में मदद करता है। जब हम अपने विचारों को स्पष्ट और साफ ढंग से कहते हैं, तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके साथ ही, जब हम अपने विचारों को कार्यों में परिणत करते हैं, तो हमें अपनी क्षमताओं और कार्यशैली पर पूरा भरोसा होता है।

कथनी और करनी दोनों हमें क्रियाशीलता और समर्पण में मदद करते हैं। कथनी हमें अपने विचारों को अन्यों के साथ साझा करने और समर्थन प्राप्त करने में मदद करती है, जबकि करनी हमें अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सक्रिय रहने और समर्थन प्राप्त करने में मदद करती है।

कथनी और करनी दोनों की समानता हमें समस्याओं का समाधान निकालने में मदद करते हैं। कथनी के माध्यम से हम समस्याओं को विचार करने और उन्हें समझने में सक्षम होते हैं, जबकि करनी हमें उन समस्याओं का समाधान निकालने और वास्तविकता में कार्यान्वित करने में मदद करती है।

कथनी और करनी की समानता हमें सामूहिक सहयोग और संगठन में मदद करते हैं। कथनी अपने विचारों को साझा करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम होती है, जो समूह में सहयोग और संगठन को बढ़ावा देती है। करनी सामूहिक कार्यवाही के माध्यम से हमें आपसी संबंधों को मजबूत बनाने और समूह के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है।

इस तरह, कथनी और करनी की समानता हमें समझ, सक्रियता, सहयोग, और समाधान में मदद करती है, जिससे हम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल हो सकते हैं।

कथनी और करनी की समानता का व्यक्तित्व पर अद्भुत प्रभाव होता है। यह समानता हमारे व्यक्तित्व को समृद्ध और संतुलित बनाती है।

**यहाँ कुछ प्रमुख प्रभाव हैं:**

कथनी और करनी दोनों का संतुलन हमें स्पष्टता और आत्मविश्वास में मदद करता है। जब हम अपने विचारों को स्पष्ट और साफ ढंग से कहते हैं, तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके साथ ही, जब हम अपने विचारों को कार्यों में परिणत करते हैं, तो हमें अपनी क्षमताओं और कार्यशैली पर पूरा भरोसा होता है।

करनी और कथनी की समानता हमें सक्रिय और निर्णयशील बनाती है। जब हम अपने विचारों को क्रियाओं में परिणत करते हैं, तो हम अपनी क्षमताओं की अभिवृद्धि करते हैं और निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

कथनी और करनी की समानता हमारे अंदर सामूहिकता और सहयोग का भाव बढ़ाती है। जब हम अपने विचारों को दूसरों के साथ साझा करते हैं, तो हमारा संबंध मजबूत होता है और हम आपसी सहयोग में एकजुट होते हैं।

कथनी और करनी की समानता हमें उत्साह और संतोष में मदद करती है। जब हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं, तो हमें एक संवेदनशील और उत्साही व्यक्ति बनने में मदद मिलती है। इसके साथ ही, जब हम अपने विचारों को कार्यों में परिणत करते हैं, तो हमें आनंद और संतोष का अनुभव होता है।

इस तरह, कथनी और करनी की समानता हमारे व्यक्तित्व को संतुलित, सक्रिय, और समृद्ध बनाती है, जिससे हम अपने जीवन में सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं । कथनी और करनी की समानता के ऐतिहासिक साक्ष्य विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में देखे जा सकते हैं। इनके माध्यम से समाज में विकास और प्रगति का मार्ग दर्शित होता । इस तरह, कथनी और करनी दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना कथनी के करनी अधूरी होती है और बिना करनी के कथनी निरर्थक होती है। इस तरह, कथनी और करनी दोनों ही हमारे जीवन में महत्वपूर्ण हैं, और हमें सही दिशा में ले जाते हैं। ये दोनों ही हमें सच्चाई के रास्ते पर चलने और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं।

**अयोध्यादेवी मालवानी को जन्मदिन (७अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का नारायण आशीर्वाद!**

# ज्ञान मँजूषा

ज्ञान मंजूषा के इस स्तंभ में हम दीदी के सतसंग के खज़ाने से कुछ अनमोल रत्न आपके लिये लाते हैं जिन्हें व्यवहार में धारण कर हम अपने जीवन को बड़ी ही आसानी से सप्त सितारा बना सकते हैं :-

**कर्म और कृपाः-**

हमारे जीवन में दो प्रकार की व्यवस्थाएँ चलती हैं । 'कर्म और कृपा।' दो ही व्यवस्था चलती है इस धरती पर – या तो कर्म चलते हैं या उसकी कृपा चलती है। यदि जीवन में सब कुछ बढ़िया चल रहा है? - तन स्वस्थ है। देखो, थोड़ी बहुत अस्वस्थता होगी, उससे अस्वस्थता में काउंट नहीं करते हैं। धन पर्याप्त है, अंबानी जितना चाहिए ऐसा नहीं है, इतना है कि खाने – पीने के बाद बचत है, इतनी व्यवस्था है। परिवार है, घर में सुख, शांति, समृद्धि है। तो...? उसकी कृपा बरस रही है। यदि कहीं भी जीवन में ज़रा सी भी असुविधा है, परेशानी है, तकलीफें हैं, कष्ट हैं तो नारायण शास्त्र कहता है कि उसकी तो कृपा बरस रही थी मगर आपका कर्म आड़े आ गया। क्योंकि हर शास्त्र, वेद, पुराण, उपनिषद, संतों की वाणी एक बात पर एक मत हैं, इस इकलौती बात पर एक मत हैं कि 24/7 उसकी कृपा बरसती है । 24/7 कृपा बरसती है । इस एक बात पर सारे शास्त्र एक मत हैं कि निरंतर उसकी कृपा बरसती रहती है, निरंतर बरसती रहती है। ये तो हम किनारे कब होते हैं ? जब हमारा कर्म बीच में आता है..उसका भुगतान करना पड़ता है। आपने देखा होगा कोई मजदूर व्यक्ति है, वह चारों तरफ से घिरा हुआ भी है। जब हमारे पास कुछ बातें आती हैं कि ऐसा चल रहा है, ऐसा चल रहा है, ऐसा चल रहा है। अंत में वह बोलता है ये सब चीजें हैं लेकिन फिर भी ईश्वर की बहुत कृपा है, बहुत कृपा है, बहुत कृपा है। जब उसको इसकी अनुभूति होती है। तो फिर हमें क्यों नहीं होती? हमें क्यों नहीं होती? आप किसी से भी बात कीजिए जो पद, पैसा, प्रतिष्ठा में कमज़ोर है वह ऐसे ही कहेगा लेकिन हम लोग तो सामर्थ्यवान हैं। हैं ना..?? उनकी बातें सुनेंगे ना – जीवन में ऐसा चल रहा है, ऐसा चल रहा है, ऐसा चल रहा है और जब अंत में अपनी वाणी को विराम देना चाहेंगे तो वह ये ही कहेगा कि ये सारी अव्यवस्थाएं हैं फिर भी उसकी कृपा है, कृपा है, कृपा है।

राज दीदी ने आगे कहा कि नारायण शास्त्र कहता है कि जब जीवन अच्छा चल रहा हो तब मोटे – मोटे अक्षरों में डार्क अंडरलाइन के साथ हर रोज़ रात आत्म चिंतन करें, कि आज मेरे माध्यम से, विचारों के माध्यम से, वाणी के माध्यम से, व्यवहार के माध्यम से क्या अच्छा हुआ..? क्या अच्छा हुआ..? जिसकी वजह से जीवन अच्छा चल रहा है, कृपा बरस रही है। कभी भी, ध्यान रखिएगा कृपा और कर्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। किंग और स्केल हम बोलते हैं ना..? काटा छापा। उछालते हो तो कभी किंग आता है तो कभी स्केल आता है। तो जीवन में भी कभी कृपा बरसती है और बरसती कृपा में हम ऐसा कुछ कर बैठते हैं कि हमारा कर्म आड़े आ जाता है। तो जब यदि कुछ विपरीतता लगती है तब भी आत्म चिंतन करें कि हम ऐसा क्या कर रहे हैं, जिसकी वजह से मुझे प्रतिकूलता, विपरीतता महसूस हो रही है। आत्मचिंतन करें। अधिक आत्मचिंतन आपको तब करना है जब जीवन सही चल रहा है। उस वक्त आपको बहुत सहज रहना है कि मेरे माध्यम से – मेरे विचार, व्यवहार, वाणी के माध्यम से अच्छे कर्म हों ताकि निरंतर उसकी कृपा बरसती रहे, बरसती रहे, बरसती रहे।

हमें दिव्य शक्ति से मांगना चाहिए। नारायण हमारी प्रार्थना ज़रूर स्वीकार करेंगे और उसे फलीभूत भी करेंगे। यह कैसे संभव होगा समझते हैं इस कहानी के माध्यम सेः-

राजा का रोज़ का नियम था, रोज़ सुबह – सुबह वह मंदिर जाता और फिर राजकाज संभालता। राजा रोज़ देखता कि

॥ 卐 ॥

जब वो मंदिर में प्रवेश करता तो मंदिर के राइट साइड में एक और लेफ्ट साइड एक भिखारी बैठा होता। मंदिर के राइट साइड जो भिखारी बैठता था, ज्यों ही राजा को आते देखता अपने साथी से कहता कि देखो अब मैं भगवान से प्रार्थना कर रहा हूँ कि 'हे ईश्वर तूने जितना राजा को दिया है ना – सुंदर वस्त्र, आभूषण, उस बात की मुझे खुशी है कि उसे बहुत दिया है, बहुत दिया है, बहुत दिया है। थोड़ा बहुत मुझे भी दे दे, थोड़ा बहुत मुझे भी दे दे।' ताकि तेरी बनाई इस दुनिया में मैं भी सुख से जी सकूँ। दूसरी तरफ बैठा हुआ भिखारी उसे कहता है कि – 'तेरा ईश्वर दिखता है क्या?' जो दिखता ही नहीं उससे क्या मांगता है तू? मैं तो राजा से मांगूंगा। धीमे से इनकी बातें चलती हैं और राजा रोज़ सुनता है और इसी तरह इन दोनों की वार्तालाप, इनका कॉन्वर्सेशन रोज़ यूं ही चलता है। एक ईश्वर से मांगता और एक राजा से मांगता। जो ईश्वर से मांगता वो दूसरे से कहता कि 'तू किससे मांग रहा है?' उसी से ना जो ईश्वर से मांग रहा है। तो 'अपन भी डायरेक्ट कांटेक्ट करते है ना, ईश्वर से ही मांगते है' और दूसरा कहता है कि जो दिखाई ही नहीं देता वो देगा कहाँ से? इन दोनों की बातें राजा के कान में रोज़ पड़ती थी। एक दिन राजा ने अपने मंत्री से कहा कि जो ईश्वर से मांगता है उसे ईश्वर संभाल लेंगे। मुझसे जो मांगता है उसे मैं संभालूंगा क्योंकि मेरा कर्त्तव्य है उसको देना। तो एक काम करो – एक प्याले में ढेर सारी अशर्फियां, सोने की गिन्नियां भर दो और ऊपर से खीर भर दो और उसे देकर आओ जो राजा के नाम से मांगता है। जो ईश्वर के नाम से मांगता है, उसके प्रति मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है। मंत्री गया, राजा के नाम से जो भिखारी माँगता था, मंत्री ने वह प्याला उसके हाथ में थमा दिया, भिखारी बड़ा खुश हुआ। दूसरे भिखारी को चिढ़ाया, देखो मैं कहता था ना कि राजा से मांग, राजा से मांग, राजा देगा। तेरा ईश्वर तो दिखता ही नहीं, तो वह कहाँ से देगा। आज मुझे तो मिल गया। उसने खीर आराम से खाई, खूब सारी थी, शाम तक खाता चला गया। धाप गया तो उसने प्याला साइड में रख दिया। उस दिन संयोग ऐसा रहा कि जो राजा के नाम से मांगता था, उसे खूब दक्षिणा मिली और जो ईश्वर के नाम से मांगता था उसे कुछ भी नहीं मिला, एक वक्त का भोजन भी नहीं मिला। शाम तक उसने खीर खाई, उसके बाद भी खीर बची रही। उसने सोचा कि अब क्या करूँगा? तब उसने वह प्याला उस भिखारी को थमाया जो ईश्वर से मांगता था। वह उससे बोला कि मैं तो धाप गया हूं, मेरा पेट भर गया है, तेरा ईश्वर तो देने नहीं आया, है ना..? तो ये ले, थोड़ी सी खीर तू भी खा ले और प्याला उसके हाथ में थमा दिया।

रात हो गई थी, सब अपने – अपने घर चले गए। दूसरे दिन राजा मंदिर में जब दर्शन करने आया तो देखा कि जो राजा से मांगता था वह तो बैठा हुआ था और जो ईश्वर से मांगता था वह गायब था। राजा ने कहा – 'कल मैंने तुम्हारे लिए खीर भेजी थी, नहीं मिली क्या?' वह भिखारी बोला – मिली थी, मैंने धाप के खा लिया, धन्यवाद है आपका। राजा बोला – 'अरे..! उसके भीतर अशर्फियां थी, सोने की गिन्नियां थी।'

उस भिखारी ने राजा से कहा – उसमें सोने के सिक्के थे तो क्या वह दूसरे भिखारी के पास चले गए? इस कहानी का सार यह है कि हमें दिव्य शक्ति से माँगना चाहिए नारायण हमारी प्रार्थना ज़रूर स्वीकार करेंगे और फलीभूत भी करेंगे।

**रक्षिका हेड़ा को जन्मदिन (१२ अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का नारायण आशीर्वाद!**

# युवा मंच

'जो कहते हो, वही करो' आमतौर पर किसी ऐसे व्यक्ति को जवाब देने के लिए कहा जाता है जो पाखंडी हो, जो लोगों को यह बता रहा हो कि उन्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए, जबकि खुद उस तरह से व्यवहार नहीं कर रहा हो।

'जो कहते हो, वही करो' से ज़्यादा बोलचाल की भाषा में, कम प्रचलित मुहावरा है ' जो अनुशासन करता है, वही अनुशासन पालता है'

इसका मतलब है कि व्यक्ति को वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह दूसरों को करने के लिए प्रेरित करता है। व्यक्ति को जो कहे, वही करना चाहिए।

इसका सबसे अच्छा उदाहरण हमारी राज दीदी हैं, वो जो कहती हैं, उसे सौ प्रतिशत अपनाती हैं। ईमानदारी, निष्ठा, वफ़ादारी और सादगी के गुणों का वे पूरी तरह से पालन करती हैं। उनकी टीम भी उनके पदचिन्हों पर चलती है और साथी लोगों को उनके पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित करते हुए निरंतर काम करती हैं । युवा पाठ्यक्रम- लीडिंग अ मीनिंगफुल लाइफ, एक जागृत पीढ़ी का निर्माण करने के उद्देश्य से बनाया गया है जो दुनिया को स्वर्ण युग में ले जाए, जहाँ हर व्यक्ति विचारों, शब्दों और कर्मों में सकारात्मक हो।

हाल ही में मेरा एक अनुभव हुआ। एक परिचित व्यक्ति जो व्यवसाय चलाता है और सक्रिय रूप से सामाजिक कार्य करता है, वह एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करने के लिए बेताब था जो वित्त टीम की देखरेख कर सके। उनके एक करीबी सहयोगी ने अपनी पत्नी को नौकरी पर रखने के लिए कहा, जिन्होंने कुछ महीने पहले स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली थी, लेकिन मालिक ने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया, यह कहते हुए कि उन्हें किसी की मदद की आवश्यकता नहीं है। कुछ दिनों बाद उन्होंने एक महिला को काम पर रखा, जो उनके समुदाय की थी और एक आम बैठक के दौरान दावा किया कि यह महिला इतनी उदार और दयालु थी कि जब कोई और आगे नहीं आया, तो उसने मदद की। उनके सहयोगी को इस रवैये से ठेस पहुंची। सादगी, ईमानदारी, वफ़ादारी और रिश्तों के महत्व की वकालत करने वाले मालिक ने अलग व्यवहार दिखाया।

बच्चा अवचेतन रूप से आस पास के वातावरण और माता-पिता के व्यवहार को देखकर सीखता है। माता-पिता जो शब्द बोलते हैं, जैसा जीवन जीते हैं, उनके संगठनात्मक कौशल बच्चे द्वारा स्वचालित रूप से आत्मसात किए जाते हैं। मुखर होने के बजाय, माता-पिता को वह व्यवहार प्रदर्शित करने की आवश्यकता है जो वे अपने बच्चे से उम्मीद करते हैं।

राज दीदी कहती हैं कि हमें अपने रिश्तों को हर चीज़ से ऊपर रखना चाहिए। स्वस्थ रिश्तों को पोषित करने के लिए व्यक्ति को वह देना चाहिए जो वह चाहता है। आइए हम सब आने वाली पीढ़ियों के लिए मानक तय करें।

सभी परिस्थितियों में विनम्र रहें, केवल बाहरी रूप से नहीं।

केवल भाषण में ही नहीं, व्यवहार में भी सत्यवादी बनें।

पारदर्शी बनें, अपारदर्शी नहीं।

सूर्य बनो और केवल पर्वतों को ही नहीं, बल्कि प्रत्येक कण को प्रकाशित करो।

॥ 卐 ॥

# बच्चों की फुलवारी

सतयुग के मार्च अंक के लिए टीम सतयुग ने जो विषय चुना है - जो कहते हो, वही करो, यह एक ऐसा विषय है जिसे बच्चे अक्सर बड़ों के सामने रखते हैं। हमारे पास बड़े लोग बच्चों को टीवी न देखने, मोबाइल का अत्यधिक उपयोग न करने की सलाह देते हैं, लेकिन वे खुद टीवी देखते हैं और मोबाइल का उपयोग करते हैं। फिर वे शिकायत करते हैं कि बच्चे अवज्ञाकारी हैं।

एक बार कक्षा में एक शिक्षक ने कॉलम में टिप्पणी लिखी। बच्चा गया और शिक्षक से पूछा कि वह रिमार्क पढ़ने में असमर्थ है। शिक्षक ने टिप्पणी पढ़ी। कृपया अपने उत्तर साफ-सुथरे और स्पष्ट रूप से लिखें ताकि शिक्षक पढ़ सकें। यही बात उस पर भी लागू होती है।

बच्चों, हम गुरु के रूप में बच्चों को शिकायत करते हुए सुनते हैं कि माता-पिता उनकी बात नहीं सुनते और उन पर ध्यान नहीं देते। लेकिन ब्रह्मांड का नियम बहुत स्पष्ट है। हम वही पाते हैं जो हम देते हैं। इसलिए, आपको सबसे पहले अपने माता-पिता, बड़ों, गुरुओं और साथियों की बात सुनना सीखना होगा। जब हम सुनेंगे, तो वे भी हमारी बात सुनेंगे।

जब हम जो कहते हैं, उसका पालन करते हैं, तो बातें संप्रेषित करना बहुत आसान हो जाता है क्योंकि हमारी हर कोशिका आपके विचारों को प्रतिबिंबित करती है, और यह आपके कार्यों और व्यवहार में दिखाई देती है।

जो कहते हैं, उसका पालन करने का एक सच्चा उदाहरण हमारी गुरु राज दीदी हैं । वह हमेशा वही करती हैं, जो वह हमें करने की सलाह देती हैं। बच्चों को उनकी सलाह है कि समय का बुद्धिमानी से उपयोग करें। सभी कार्यों के लिए समय आवंटित करें और लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें। दीदी अपनी शब्दावली के उपयोग के प्रति बहुत सतर्क हैं। वह हमेशा सकारात्मक और अच्छे शब्दों का ही उपयोग करती हैं । उनके सभी उत्तर पुष्टि के साथ शुरू होते हैं, हाँ, लेकिन क्या हम इसे थोड़ा अलग तरीके से कर सकते हैं। हमें उनसे यह सीखना चाहिए । हमें केवल सही और सकारात्मक शब्दों का उपयोग करना चाहिए। हमें हमेशा हाँ शब्द का उपयोग करना चाहिए और फिर वाक्य को थोड़ा अलग तरीके से रखना चाहिए।

तो बस बच्चों जो कहो वो करो और अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर लो ।

# दीदी के छाँव तले

नारायण भवन में कन्फेशन के माध्यम से सतसंगियों को यह अच्छी तरह समझ में आ गया है कि जैसी करनी, वैसी भरनी। जैसा बीज बोयेंगे वैसा ही फल मिलेगा। जो शब्द ब्रह्मांड में भेजेंगे वही शब्द ही लौट कर आयेंगे और अपना असर दिखाएंगे।

**कुछ ऐसी शेयरिंग्स और कन्फेशन जो इस बात को प्रमाणित करती हैं और हमें आगे के लिए आगाह करती हैं कि हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए;-**

1) मैंने अपने पिता से कभी अच्छा व्यवहार नहीं किया और नारायण नारायण शब्द कहे। आज मेरा बेटा भी मुझसे ठीक से बात नहीं करता है और नारायण शब्दों का इस्तेमाल करता है।

2) ननद की बेटी हमारे घर आ कर रहती थी, तब उसकी आदतों की चर्चा करती थी, कि कैसी मां है कुछ सिखाया नहीं। आज मेरी बेटी भी मेरा कहना नहीं मानती है।

3) बचपन में छोटी बहन के शरीर से दुर्गंध आती थी तब मैं उसका बहुत मज़ाक बनाती थी, और उसे मेरे कपड़े नहीं पहनने देती थी। आज मेरी बड़ी बेटी के शरीर से दुर्गंध आती है और छोटी बेटी के सिर में जूएं हो गई हैं।

4) मेरी चाची जी मां नहीं बन सकती थीं। मेरी मां ने उनकी कई बार कई जगह चर्चा की। आज मेरा भाई 40 वर्ष का हो गया है, उसका विवाह नहीं हो पा रहा है और रिश्ते आते भी हैं तो ऐसी लड़कियों के, जो मां नहीं बन सकती हैं।

5) कई साल पहले, पति ने कहीं एक ज्योतिष को दिखाया था, तब ज्योतिषी ने कहा था कि आपके कोई बेटा नहीं है , बल्कि हमारे दो बेटे थे, पर पति ने मज़ाक के तौर पर हामी भर दी थी कि हाँ हमारे कोई बेटा नहीं है rआज हम दोनों अकेले रहते हैं, दोनों बेटे अपने परिवारों के साथ बाहर रहते हैं, हमें बेटों का कोई सुख नहीं है।

6) बड़ा भाई पढ़ने में नारायण हेल्प था और मैं होशियार। मैं खुद पर घमंड करती थी और उनको कहती थी कि जीवन में कुछ नहीं कर पाओगे। आज सभी भाइयों की अच्छी नौकरी है, और मैं घर पर बैठी हूं।

7) 15 साल पहले किसी के घर से एक अंगूठी चुराई थी, तब किसी को कुछ पता नहीं चला था। आज एक एक करके घर में से चार अंगूठियां गुम हो गई हैं और कुछ पता नहीं चल पा रहा है क्योंकि कोई बाहरी व्यक्ति आया ही नहीं कई दिनों से।

8) मेरी हेल्पर ने अपनी सास व ननद से गलत व्यवहार किया। बेटे की नौकरी गई, खुद का काम छूट गया। मैंने उसे समझाया उसके नकारात्मक कर्मों के बारे में तब उसने अपनी सासु मां व ननद से माथा टेक कर माफी मांगी। आज खुशी खुशी उसका फ़ोन आया कि बेटे की 30000 रूपए की नौकरी लग गई है और स्वयं का भी काम लग गया है।

9) मैं सासु मां को पलट कर जवाब देती थी। चर्चा करती थी कि मेरे पास रहती हैं । गर्व करती थी। पति पुत्र की समृद्धि रुकी हुई है।

10) हम चार भाई थे, सासु मां बीमार हुईं तब हमारे पास रहीं और हमने इलाज करवाया। मैंने और पति ने सब किया पर उनको खूब सुनाया। आज समृद्धि रुकी हुई है।

11) 5 साल पहले पति ने ननद की हेल्प की थी। उसकी बहुत चर्चा की और पति को भी और मदद करने से मना किया। अब समृद्धि टिकती नहीं है।

दीदी कहते हैं कि शब्द महज़ शब्द नहीं हैं, आपका भविष्य भी हैं। आप अपना भाग्य सिर्फ़ अपने कर्मों से नहीं लिखते हैं, अपने मुख द्वारा उच्चारित शब्दों से भी लिखते हैं। यदि अपना भविष्य सुंदर, आशीर्वादों से परिपूर्ण चाहिए तो कर्म तो अच्छे करने ही हैं उससे पहले अपनी वाणी भी अच्छी करनी है। उच्चारित करने के पहले सोच लीजिएगा कि क्या परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

सतसंग में दूसरों की शेयरिंग व उसके परिणाम सुन कर जब आप अवेयर हो जाते हैं और गलत कर्म करने से रुक जाते हैं, तो समझ लीजिए कि यह आपके किसी अच्छे कर्म के फ़ल हैं जिसके तहत प्रकृति ने आपको पहले से ही चेता दिया है। कृपा मानिए और अच्छे कर्म ही करिए।

**मनस्वी राठी को जन्मदिन (८ अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति , प्रगति, सफलता का नारायण आशीर्वाद !**

## प्रेरणादायक वृत्तांत

# क्रिकेटर राजू

एक बार राजू नाम का एक लड़का था, वह अक्सर ही क्रिकेट के बारे में बातें करता था और कहता था कि क्रिकेट उसका सबसे पसंदीदा खेल है। वो अपनी ख्वाइश भी जताता था कि वो एक मशहूर क्रिकेटर बनना चाहता है। वो अपने ख्वाइश में इतना ज़्यादा तल्लीन था कि वो चाहता था कि लोग उसकी ख्वाइश के बारे में जानें और खुद को एक मंझा हुआ क्रिकेटर समझने लगा था। मगर वो गलत था क्योंकि वो केवल क्रिकेटर बनने के बारे में सोचता था और उतनी प्रैक्टिस नहीं करता था जितना सफल होने के लिए करनी चाहिए। वो इसके प्रति काफी लापरवाह था और अक्सर ही अपने मैच छोड़कर घर पर बैठा रहता था।

उसके पिता अपने बच्चे की स्थिति को अच्छी तरह से समझ चुके थे और उसे समझाने का प्रयास कर रहे थे। एक दिन जब राजू आलस दिखा रहा था, उसके पिता आये और उससे उसके क्रिकेटर बनने के लक्ष्य के बारे में बताने लगे। वो बोले -'बेटा तुम्हें यह समझना होगा कि तुम्हारे दिमाग में जो विचार हैं वो दूसरों के लिए बेकार हैं। इस दुनिया में सिर्फ़ तुम्हारा काम ही याद रखा जाता है और वही तुम्हें पहचान भी दिलाता है। तुम क्या करते हो और क्या पाते हो वह मायने रखता है ना कि वह जो सिर्फ़ तुम सोचते हो या जिस पर यकीन करते हो।

अगर तुम चाहते हो कि हर कोई तुम्हें तुम्हारी क्रिकेट की कला से पहचाने तो तुम्हें इसके लिए काम करना होगा।' छोटी सी बातचीत के इस अंश ने राजू के दिमाग को पूरी तरह से बदल दिया। उसने कड़ी मेहनत व प्रक्टिस करनी शुरू कर दी और बहुत जल्द वो अंतरराज्जीय प्रतियोगिता में चनियत हो गया। वह बहुत ही खुश था और अपने पिता को उनके मार्गदर्शन और समर्थन के लिए बहुत धन्यवाद दिया। उसके पिता ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, 'हमेशा याद रखना तुम्हारी कथनी और करनी एक होगी तभी तुम्हें सफलता मिलेगी।'

॥ 卐 ॥

# एक भूल

एक गाँव में एक बहुत चालाक बूढ़ा रहता था। वह गरीबों और कमज़ोरों से उनके सामने बहुत विनम्रता से बात करता था लेकिन उनकी पीठ पीछे उन्हें कोसना शुरू कर देता था और उनके बारे में बेईमानी भरी बातें करता था। जब उसे कोई नहीं देख रहा होता है तो वो उनके साथ गलत व्यवहार भी करता था, यह सोचकर कि इससे उसका क्या बिगड़ेगा। विशेषकर वह शारीरिक रूप से अक्षम लोगों का मज़ाक उड़ाता और उनका अपमान करता था । यहाँ तक कि गाँव में हर कोई उस बूढ़े व्यक्ति की गलत आदतों के बारे में जानता था और इसलिए उससे दूर रहता था, लेकिन जो कोई भी पहली बार उससे मिलता वह उसके विनम्र स्वभाव का कायल हो जाता।

एक दिन, ऐसा हुआ कि गाँव की समिति ने एक वृद्ध व्यक्ति की तलाश शुरू की, जो विशेष रूप से सक्षम बच्चों के लिए स्थापित एक स्कूल का प्रबंधन कर सके। वेतन आकर्षक था और बूढ़े व्यक्ति को भरोसा था कि समिति उसके नाम की सिफारिश करेगी क्योंकि वह गाँव का सबसे विनम्र व्यक्ति है।

लेकिन बूढ़े आदमी के आश्चर्य का ठिकाना ना रहा, समिति ने उनके नाम पर विचार तो नहीं ही किया साथ ही उसके नाम को पूरी तरह से खारिज कर दिया। बूढ़े व्यक्ति ने समिति अध्यक्ष से पूछा कि ऐसा क्यों किया गया, तो अध्यक्ष ने जवाब दिया – आपको लगता है कि आप बहुत विनम्र हैं और विकलांग लोगों के लिए विचार करते हैं, लेकिन यह सिर्फ़ आपकी गलत धारणा है। आप दूसरों के साथ उनके बारे में अच्छी तरह से बोल रहे होंगे, लेकिन पूरे गाँव को आपके नकारात्मक कर्म और गाँव वालों के प्रति अपमानजनक कार्यों के बारे में पता है। संभवतः आपकी हरकतें आपके शब्दों से अधिक ज़ोर से बोलती हैं। बूढ़ा व्यक्ति शर्म से पानी पानी हो गया और वहां से वापस चला गया।

उसने बहुत चिंतन किया और स्वयं को सुधारने के लिए काम करना शुरू किया ।अब वह जो कहता था वही करता था । थोड़े ही दिनों में उसने अपनी कथनी करनी को समान करके वापस अपना खोया हुआ सम्मान प्राप्त कर लिया ।

**विनोद राठी को जन्मदिन (१४ अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का नारायण आशीर्वाद।**

**विनोद राठी और नम्रता राठी को विवाह वर्षगाँठ (२० अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का नारायण आशीर्वाद ।**

# पण्डित जी सुधर गये

एक बार एक पंडित जी बस में चढ़े। कंडक्टर को पैसे देकर टिकट लिया । कंडक्टर ने 10 की जगह गलती से उन्हें 20 रुपये दे दिये । पंडित जी समझ गये कि यह गलती से हुआ है परंतु उनके मन में लालच आया कि ये जो अधिक पैसे दिये है ये कंडक्टर की गलती है तो इसे मैं मना क्यों करूँ ?

पूरे सफ़र के दौरान उनके मन में द्वंद चल रहा था कि क्या ऐसा करना उचित है? अंत में जब कंडक्टर ने आवाज़ लगायी कि पंडितजी आपका स्टॉप आ गया है तो उनसे रहा नहीं गया और चुपचाप उन्होंने जेब से 10 रुपये निकाले और कंडक्टर के हाथ में थमा दिए । पैसे देते वक़्त उन्होंने कंडक्टर से कहा अपना काम ध्यान से किया करो , तुमने मुझे गलती से 10 रुपये ज़्यादा दे दिये थे । तब कंडक्टर मुस्कुराया और बोला, वो मैंने जानबूझकर ऐसा किया । उसकी बात सुन कर पंडित जी स्तब्ध रह गए और पूछा के ऐसा क्यों?

तब उसने कहा कि मैंने आपके बारे में बहुत सुन रखा है कि आपके प्रवचन सुन कर बहुतों का जीवन सुधर चुका है ।आप सभी को सही मार्ग पर चलने , धन का लोभ न करने और शुभ कर्म करने की सलाह देते हैं । मैं जानना चाहता था कि कहीं आपकी कथनी और करनी में अंतर तो नहीं ! परंतु पैसे वापस कर आपने इस बात का प्रमाण दे दिया है कि आपकी कथनी और करनी में पूरी समानता है ।

बस से उतरते वक्त पंडित जी ने ईश्वर को धन्यवाद ज्ञापित किया कि हे प्रभु आपका धन्यवाद है कि आपने मुझे सही समय पर संवार लिया नहीं तो मात्र 10 रुपये के लालच की वजह से मेरे चरित्र पर दाग लग जाता ।

इसलिए कहते है कि अपने अंतर आत्मा की आवाज़ को ज़रूर सुनें क्योंकि कुछ भी ग़लत करने से पहले एक बार वह आपको झकझोरती ज़रूर है ।

अपनी करनी और कथनी में हमेशा समानता रखें ।

**रंजीता मालयानी को जन्मदिन (१२ अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का नारायण आशीर्वाद!**

**सुषमा तापड़िया को जन्मदिन (३० अप्रैल) पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का नारायण आशीर्वाद !**

।। 卐 ।।

# Pavaan Vani



**Dear Narayan Premiyo,**

**ll Narayan Narayand ll**

The similarity of words and actions gives a beautiful dimension to our personality. It gives us an identity in the crowd and gives meaning to our life. In this context, I find this narrative of Gandhiji very inspiring -

Once a person went to Gandhiji and asked, "Bapuji, how can we give up eating jaggery?"

On this, Gandhiji told him, "I will give the answer to this question after a few days. You come after two days."

That person left from there and came to meet Bapuji again after two days. That day Gandhiji said, "With full faith and discipline, take a vow not to eat jaggery."

On this, that person got angry and said, "You could have said this sentence that day too? Why did you call me today for this?"

On this, Gandhiji said very politely, "That is because till that day, I myself used to eat jaggery, so it would not be appropriate for me to say anything to you."  From that day onwards, I first worked on myself and stopped eating jaggery and hence today I can tell you with full confidence that if I can do it, you too can surely do it.

Mahatma Gandhi is given so much respect and the status of the **Father of the nation** due to this quality of his "**Being equanimous in words and actions".**

Being equanimous in words and actions not only takes us to heights, but also gives meaning to our being human.

Rest all good,

R. Modi

## CO-EDITOR
**Deepti Shukla** 09869076902

## EDITORIAL TEAM
**Vidya Shastry** 09821327562
**Mona Rauka** 09821502064

### Main Office
**Narayan Bhawan**
**Topiwala Compound, station road,**
**Goregaon (West), Mumbai.**

### Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.


### Regional Office

| | | |
|---|---|---|
| **AHMEDABAD** | JAIWINI SHAH | 9712945552 |
| **AKOLA** | SHOBHA AGRAWAL | 9423102461 |
| **AKOLA** | RIYA AGARWAL | 9075322783 |
| **AMRAVATI** | TARULATA AGRAWAL | 9422855590 |
| **AURANGABAD** | MADHURI DHANUKA | 7040666999 |
| **BANGALORE** | KANISHKA PODDAR | 7045724921 |
| **BANGALORE** | SHUBHANGI AGRAWAL | 9341402211 |
| **BASTI** | POONAM GADIA | 9839582411 |
| **BIHAR** | POONAM DUDHANI | 9431160611 |
| **BHILWADA** | REKHA CHOUDHARY | 8947036241 |
| **BHOPAL** | RENU GATTANI | 9826377979 |
| **CHENNAI** | NIRMALA CHOUDHARY | 9380111170 |
| **DELHI (NOIDA)** | TARUN CHANDAK | 9560338327 |
| **DELHI(NOIDA)** | MEGHA GUPTA | 9968696600 |
| **DELHI (W)** | RENU VIJ | 9899277422 |
| **DHULIA** | RENU BHATWAL | 878571680 |
| **GONDIYA** | RADHIKA AGRAWAL | 9326811588 |
| **GAUHATI** | SARLA LAHOTI | 9435042637 |
| **HYDERABAD** | SNEHALATA KEDIA | 9247819681 |
| **INDORE** | DHANSHREE SHIRALKAR | 9324799502 |
| **JALANA** | RAJNI AGRAWAL | 8888882666 |
| **JALGAON** | KALA AGARWAL | 9325038277 |
| **JAIPUR** | PREETI SHARMA | 9461046537 |
| **JAIPUR** | SUNITA SHARMA | 8949357310 |
| **JHUNJHNU** | PUSHPA DEVI TIBEREWAL | 9694966254 |
| **ICHAKARANJI** | JAY PRAKASH GOENKA | 9422043578 |
| **KOLHAPUR** | RADHIKA KUMTHEKAR | 9518980632 |
| **KOLKATTA** | SWETA KEDIA | 9831543533 |
| **KANPUR** | NEELAM AGARWAL | 9956359597 |
| **LATUR** | JYOTI BHUTADA | 9657656991 |
| **MALEGAON** | REKHA GARODIA | 9595659042 |
| **MALEGAON** | AARTI CHOUDHARY | 9673519641 |
| **MORBI** | KALPANA CHOUARDIA | 8469927279 |
| **NAGPUR** | SUDHA AGRAWAL | 9373101818 |
| **NANDED** | CHANDA KABRA | 9422415436 |
| **NAWALGARH** | MAMTA SINGRODIA | 9460844144 |
| **NASIK** | SUNITA AGARWAL | 9892344435 |
| **PUNE** | ABHA CHOUDHARY | 9373161261 |
| **PATNA** | ARBIND KUMAR | 9422126725 |
| **PURULIYA** | MRIDU RATHI | 9434012619 |
| **PARATWADA** | RAKHI MANISH AGRAWAL | 9763263911 |
| **RAIPUR** | ADITI AGRAWAL | 7898588999 |
| **RANCHI** | ANAND CHOUDHARY | 9431115477 |
| **SURAT** | RANJANA AGARWAL | 9328199171 |
| **Sangli** | Hema Mantri | 9403571677 |
| **SIKAR (RAJASTHAN)** | SUSHMA AGARWAL | 9320066700 |
| **SHRI GANGANAGAR** | MADHU TRIVEDI | 9468881560 |
| **SATARA** | NEELAM KDAM | 9923557133 |
| **SHOLAPUR** | SUVARNA BALDEVA | 9561414443 |
| **SILIGURI** | AKANKSHA MUNDHRA | 9564025556 |
| **TATA NAGAR** | UMA ARAWAL | 9642556770 |
| **ROURKELA** | UMA ARAWAL | 9776890000 |
| **UDAIPUR** | GUNWATI GOYAL | 9223563020 |
| **HUBLI** | PALLAVI MALANI | 9901382572 |
| **VARANASI** | ANITA BHALOTIA | 9918388543 |
| **VIJAYWADA** | KIRAN JHAWAR | 9703933740 |
| **VARDHA** | RUPA SINGHANIA | 9833538222 |
| **VISHAKAPATTNAM** | MANJU GUPTA | 9848936660 |

### INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

| | | |
|---|---|---|
| **AUSTRALIA** | RANJANA MODI | 61470045681 |
| **DUBAI** | VIMLA PODDAR | +971528371106 |
| **KATHMANDU** | RICHA KEDIA | +977985-1132261 |
| **SINGAPORE** | POOJA GUPTA | +6591454445 |
| **SHRJAH-UAE** | SHILPA MANJARE | +971501752655 |
| **BANGKOK** | GAYATRI AGARWAL | +66952479920 |
| **VIRATNAGAR** | MANJU AGARWAL | +977980-2792005 |
| **VIRATNAGAR** | VANDANA GOYAL | +977984-2377821 |

# Editorial

**Dear readers,**

**II Narayan Narayan II**

Recently, while walking, I overheard the conversation of friends passing by which gave a new topic to Team Satyug.

They were talking among themselves about a third neighbor who had just come to their building. Both of them said that the new neighbor is a little strange and cannot be trusted. She says something and does something else. After this, both of them kept talking for quite a long time. To avoid negativity, I increased the speed of my walk. But in my mind, I thanked those two unknown friends who gave us a topic to think about and ponder over- Similarity of words and actions. For our next edition of Satyug.

With faith that, all of you will always follow equality of words and actions.

With best wishes -

Yours own,
**Sandhya Gupta**

**To get**
**important message and information from**
**NRSP Please Register yourself on 08369501979**
**Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP**

we are on net

**narayanreikisatsangparivar@narayanreiki**


*Publisher* **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
*Printer* - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

# Call of Satyug

**'Now I cannot find those characters who live up to their words. Even if I want to deny it, I cannot find the words.'**

Equality of words and actions is the best way to live life. It is this quality within us which gives us progress, development, success in life and a firm place in society. Let us first understand the broad meaning of words and actions: -

peech and action are two different ways of expressions. In speech, we express our promises or thoughts through words, while in action, we transform those thoughts into actions or deeds.

But there are some differences here too. Speech is continuous, while action is a time-limited action. In speech, we often debate, present our ideas, or tell someone, while in action, we do actual work. Similarly, in speech, we express our thoughts, while in action, we make our thoughts a reality through our actions.

Both speech and action are important elements of social and personal communication. To understand the similarity between these two, we need to have a detailed knowledge about them.

**Speech**

Personal expression- Speech is a means of personal expression, in which we share our thoughts, perceptions, and ideas through words.

Communication: - Speech plays an important role in communication, in which ideas are presented through personal or social dialogue.

**Action**

Performance of actions: In action, we demonstrate our thoughts and perceptions through actions.

Activity and dedication: - Action makes us active and dedicated, as it makes us active to achieve our objectives.

Effective actions translate into reality and help us accomplish our goals.

Speech and action both are important in our communicative and social life. When we interact with others, we do it by means of speech, and when we convert our speech into action, we do it by effort. The balance of both strengthens our relations and takes us on the right path in society.

There is a French proverb, 'Think whatever you want, but say only what you can do or are going to do'. A person who is consistent in thoughts, words and deeds is considered a true Mahatma, like Raj Didi. When Didi talks about strengthening relations, she also makes equal efforts to strengthen them. One special thing about her regarding relations is that she gives love, respect and honor to every member of both families - Modi family and NRSP

family - by keeping them on the same level. While giving work, she not only looks at the capability of the worker, but also makes every possible effort to ensure that every volunteer gets equal opportunity. For this, if any dilemma arises, then to get out of it, she has been drawing chits in Narayan Bhawan for years and working according to Narayan's orders. She herself is so honest that she is able to urge the satsangis to remain honest and loyal. Didi always says speak slowly, sweetly, and positively. It has been such a long time since I have been associated with Satsang that I have always seen Didi speak slowly, sweetly, and positively. Satsangis spread across the world are also witnesses to this. All the famous knowledgeable meditators in the world who have lived a meaningful life, their style and actions have always been the same.

Similar words and actions are considered to be as good as nectar. By doing work, we give a form to the work. 'Whatever you want to do tomorrow, do it today, whatever you want to do today, do it now' gives us the message of humility. Raj Didi also says that as soon as a good thought comes to your mind, convert it into action immediately because words and actions should always be same as thoughts and words. Harmony between words and actions is the best way to improve yourself.

Equality in words and actions gives us many benefits. Here are some of the main benefits:

The balance of both words and actions helps us in clarity and confidence. When we express our thoughts clearly, our confidence increases. Along with this, when we convert our thoughts into actions, we have full faith in our abilities and work style.

Both words and actions help us in accomplishment and dedication. Words help us to share our thoughts with others and get support, while actions help us to be active and give support to achieve our goals.

The consistency of both words and actions helps us to solve problems and find solutions. Through words, we are able to think and understand the problems, while actions help us to find solutions to those problems and implement them in reality.

Consistency of words and actions helps us in group cooperation and organization. Words are an important means of sharing our ideas, which promotes cooperation and organization in the group. Actions help us to strengthen mutual relationships and achieve group goals through group action.

In this way, consistency of words and actions helps us in understanding, activism, cooperation, and solution, so that we can be successful in achieving our objectives.

Consistency of words and actions have a wonderful effect on personality. This consistency makes our personality rich and balanced.

Here are some major effects-

The balance of both words and actions helps us in clarity and confidence. When we express our thoughts clearly, our confidence increases. Along with this, when we convert our thoughts into actions, we have full confidence in our abilities and working style.

Consistency of words and actions makes us active and decisive. When we convert our thoughts into actions, we enhance our abilities and are able to take decisions.

Consistency of words and actions makes us value collectivism and cooperation. When we share our thoughts with others, our relationship becomes strong, and we unite in mutual cooperation.

Consistency of words and actions helps us in enthusiasm and satisfaction. When we express our thoughts, it helps us to become a sensitive and enthusiastic person. Along with this, when we convert our thoughts into actions, we experience joy and satisfaction.

In this way, consonance of words and actions makes our personality balanced, active, and prosperous, which can lead us towards success in our life. Historical evidence of consonance of words and actions can be seen in different cultures and societies. Through these, the path of development and progress of society is shown. In this way, both words and deeds complement each other. Actions without words are incomplete and words without deeds are meaningless. Both of these are important in our life and lead us in the right direction. In this way, both words and deeds are important in our life, and lead us in the right direction. Both of these help us to walk on the path of truth and achieve our objectives.

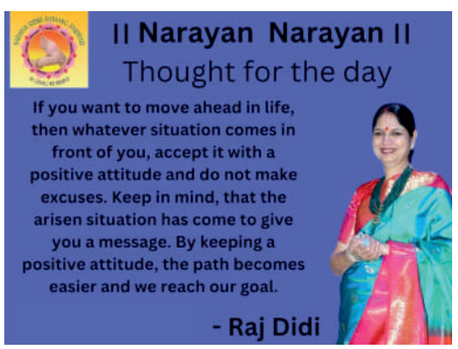


**Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ayodhya Devi Malpanion her birthday (7th April ) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.**

# Wisdom Box
# (Glimpses of Satsang)

In this column of Wisdom Box, we have brought for you some priceless gems from the treasury of Didi's Satsang. By adopting them in practice, we can easily make our life seven stars: -

Raj Didi said in this session that only two types of systems work in our life. "Karma and Kripa (Grace)." either karma works, or God's grace works. If everything is going well in life. The body is healthy, Money is sufficient, there are enough savings after fulfilling our daily necessities, we have a family, there is happiness, peace and prosperity at home. So.? This means his blessings are showering upon us. If there is even the slightest inconvenience, problem, trouble or suffering anywhere in life, then Narayan Shastra says that His blessings were showering but now your karma has affected it and that is why you are facing problems in life. Every scripture, Veda, Purana, Upanishad, words of saints are unanimous on one thing.

There is unanimous opinion on this thing that His blessings are showered 24/7 in our life. When our karma comes in between then we have to face problems in life.? We have to pay for our Karma. You must have seen that there is a laborer, he is surrounded by all sides due to financial issues. When he shares that what all issues he is facing in life, still in the end he says, all these things are there but still God's Grace is showering upon him.

When he realizes the power of The God's Grace then why don't we have the realization of God's Grace.? If you talk to anyone who is weak in position, money, and prestige, he will say the same, but we are powerful. Isn't it...?? We see that even a person who is facing many issues in life when he shares his problems with someone, he always ends his sharing by saying in spite of all the issues in his life God's Grace is shining in his life.

Raj Didi further said that Narayan Shastra says that when life is going well, do introspection every night, think that what good you did with your words and behavior.? What good happened.? Because of which life is going well, blessings are showering upon you. Always remember that Grace and karma are two sides of the same coin. We say king and scale, right.? When you toss, sometimes a king comes up and sometimes a scale comes up. So sometimes in life, when blessings are showering in our lives, we do something that our karma gets in the way. So, even when something seems unfavorable, still think- what you are doing due to which you are feeling low", Introspect. You have to do more self-introspection when life is going well. At that time, you have to be very aware that you do only good deeds through your thoughts, behavior, speech so that His blessings continue to shower upon him.

Raj Didi conveyed her message through the story of A King. The king's daily routine was to go to the temple every morning and then proceed towards his court. Every day the king would see that when he entered the temple, there would be a beggar sitting on the right side of the temple and one beggar on the left side of the temple. As soon as the beggar sitting on the right side of the temple, would see the king coming, he would say to his

friend, “Look, now I am praying to God, “O God, you have given so much to the king – beautiful clothes, jewelry. I am happy that You have given a lot, you have given a lot, you have given a lot to the king. Give me a little bit, give me a little bit. So that I too can live happily in this world created by you.” The beggar sitting on the other side would say “Is your God visible.?” How can you ask someone who is not visible.? I will ask the king.” Their conversation would go on slowly and the king heard it every day.

One would ask from God and other would ask from the king. The one who asks from God would say to other, “From whom are you asking...?” You are asking from the one who is himself asking from The God. So, “we should contact The God directly, we should ask from The God only” and the other one would reply from where will he give who himself is not visible...? The words of these two reached the king’s ears every day. One day the king told his minister that ‘whoever asks from God, God will take care of him. Who is asking from me, I will handle it because it is my duty to give it to him. So do one thing – fill a cup with a lot of ashrafis, gold coins and fill kheer on top and give it to the one who asks in the name of the king, the one who asks in the name of God, I am not responsible for that.’ The minister took a bowl, kept gold coins in the bottom and then covered them with kheer. The minister took the bowl to the temple and handed over the bowl to the beggar who had asked in the name of the king; the beggar was very happy. Looking at the other beggar he teased, see I used to say that ask from the king, ask from the king, the king will give. Your God is not visible, so how will he give.

Today I got it. He ate the kheer, there was a lot of it, so he continued eating till the evening. When he was full, he put the bowl aside. It was a coincidence, that day was such, that the one who asked in the name of the king got a lot of Dakshina and the one who asked in the name of God did not get anything, not even one meal. The kheer was still left. The beggar thought what will he do now...? Then he handed the bowl of kheer, to the one who asked from God. He told him that he had eaten kheer to his hearts content, his stomach is full, your God has not come to give you anything, so take some kheer and eat it, saying this he handed the bowl over to him. It was night and everyone went home. Next day, when the king came to the temple for darshan, he saw that the one who had prayed to the king was sitting, but the one who had prayed to God was missing. The king said – “Yesterday I sent kheer for you; didn’t you get it?” He said – I got it, I ate it quickly, thanks to you. The king said - “Hey...! There were gold coins inside it” The beggar said oh...! The coins have gone to the other beggar.

The moral of the story is to ask the one who has. Ask from “The Supreme power, The Narayan and your wish will be granted.”

**Narayan divine blessings with Narayan shakti to Rishika Hedaon her birthday (12th March ) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.**

# Youth Desk

'Practice what you preach' is usually spoken as a retort to someone who is being hypocritical, who is telling people how they should behave while not themselves behaving in that way.

The more colloquial, less proverbial phrase than 'practice what you preach', is 'walk the talk',

It means that one should behave in the way that they encourage other people to behave in. One ought to practice what one preaches.

The best example is our Raj Didi, who hundred percent practices what she preaches. The attributes of honesty, sincerity, loyalty, and simplicity are followed by her to an absolute. Her team too follows her footsteps and incessantly works to motivate the fellow people to follow her footsteps. **The youth course- Leading A Meaningful Life is all about creating an awakened generation which takes the world into the Golden age where every person is positive in thoughts, words, and deeds.**

Recently I had an experience. A known one who runs a business and is actively into social work was desperate to hire a person who could supervise the finance team. One of his close associates asked to employ his wife who has taken voluntary retirement a few months ago but the owner refused it politely citing that they do not need any help. A few days later they hired a lady who was of their community and boasted during a general meeting that this lady was so generous and kind to help when nobody else came forward. His associate was hurt due to this attitude. The boss who used to advocate simplicity, honesty, loyalty, and importance of relationships had displayed different behavior.

A child learns subconsciously by observing the environment and parents' behavior. The words the parents use, the attitude, their organizational skills are automatically imbibed by the children. Instead of being vocal, the parents need to display the behavior they expect from their child.

Raj Didi says that we should value our relationships above everything. To nurture healthy relationships, one needs to give what one wants.

Let us all walk the talk and set standards for generations to follow.

***Be humble in all situations, not only outwardly.**

Be truthful in attitude, not only in speech.

Be transparent, not opaque.

**Be the Sun and light every particle, not only mountains**.

॥ 卐 ॥

# Children's Desk

The topic team Satyug chose for the March edition of Satyug - Practice what you preach is a topic which children often voice out to elders. We have adults advising children not to watch TV, not to use mobile excessively but they themselves watch TV and use mobile. Then they complain that children are disobedient.

Once in a class, a teacher put a remark in the column. The child went and told the teacher that he was unable to read the remarks. The teacher read the remarks. The message is one should write answers neatly and legibly so that the teacher can read. The same applied to him, too.

Children we as mentors hear children complaining that parents do not listen and pay attention to them. But the law of the universe is very clear. We only receive what we give. So, you will first learn to listen to what your parents, elders, mentors, and peers have to say. When we listen, they will also give us an ear.

When we practice what we preach, things become very easy to communicate because our every cell reflects your thoughts, and it shows in your actions and behavior.

A true example of practicing what you preach is our Guru Raj Didi. She always practices what she advises us to do. To children, her advice is to use time wisely. To allocate time to all the tasks and to be focused on the goal. Didi is very alert to the use of her vocabulary. She always uses positive and good words only. All her answers start with the affirmation, yes, but can we do it a little differently. We should learn this from her. Let us use only the right and positive words. Let us always use the word Yes and then place the sentence, maybe a little differently.

Many times, we tell our friends to be careful with our things, but when we use other things, we are not careful.

Let us all practice what we preach.

**Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ranjita Malpanion her birthday (12th March ) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.**

# Under The Guidance of Rajdidi

Through confession in the Narayan Bhawan, the satsangis have understood very well that whatever one does, one receives the same. Whatever seed you sow, you will get the same fruit. Whatever words you send into the universe, those words will come back and show their impact.Some such sharing and confessions which prove this and make us aware about how we should behave;-

1) I never behaved well with my father and said Narayan Narayan words to him. Today my son also does not talk to me properly and uses Narayan words.

2) My sister-in-law's daughter used to come and stay at our house, then we used to talk about her habits, what kind of mother she is, she didn't teach anything. Today even my daughter does not listen to me.

3) In my childhood, I used to make fun of my younger sister when her body smelled bad and would not let her wear my clothes. Today my elder daughter has a bad body odor, and the younger daughter has head lice.

4) My aunt could not become a mother. My mother discussed her many times at many places. Today my brother has turned 40, he is not able to get married and even if the offers come, they are from girls who cannot become mothers.

5) Many years ago, my husband had consulted an astrologer, then the astrologer had said that you do not have any sons as per your stars, but we had 2 sons, but the husband had said it as a joke. Today both of us live alone, both sons live outside with their families, we do not have the pleasure of sons.

6) Elder brother was Narayan help in studies and I was smart. I used to be proud of myself and told them that they would not be able to do anything in life. Today all the brothers have good jobs, and I am sitting at home.

7) 15 years ago, I stole a ring from someone's house, then no one knew anything. Today, four rings have gone missing from the house one by one, and nothing can be found because no outsider has come for many days.

8) My helper misbehaved with her mother-in-law and sister-in-law. Repercussion was Son lost his job and, she too lost her work. After explaining, she bowed her head and apologized to her mother-in-law and sister-in-law. Today her son has got a job worth Rs 30,000 and she also got her job back.

9) I used to answer back to my Mother-in-law. She used to discuss that and was proud.

The prosperity of husband and son has stopped. We were four brothers, when our mother-in-law fell ill, she stayed with us, and we got her treated. My husband and I did everything but told her a lot. Today prosperity has stopped.

10) 5 years ago, my husband helped my sister-in-law. Discussed it a lot and even forbade my husband from helping her further. Now prosperity does not last.

11) 5 years ago husband had his sister. Discussed it a lot and even forbade my husband from helping her further. Now prosperity does not last.

Didi says that words are not just words, they define your future. You don't just write your destiny with your actions, you also write it with the words you utter. If you want your future to be beautiful and full of blessings, then you have to do good deeds and before that, you also have to make your words good. Before uttering it, think about what consequences you may have to face.

When you become aware after listening to the sharing of others and its results in the Satsang and stop doing wrong deeds, then understand that these are the consequenses of some good deeds of yours because of which nature has warned you. Please accept the blessings and do good deeds only.

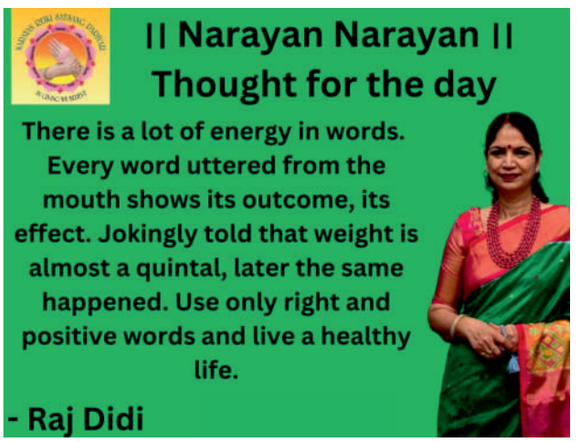


**Narayan divine blessings with Narayan shakti to Manasvi Rathi on her birthday (8th April ) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.**

# Inspirational Memoirs

## Cricketer Raju

Once upon a time there was a boy named Raju, he often talked about cricket and said that cricket was his favorite game. He also expressed his desire to become a famous cricketer. He was so engrossed in his desire that he wanted people to know about his desire and started considering himself an accomplished cricketer. But he was wrong because he only thought about becoming a cricketer and did not practice as much as he needed to be successful. He was quite careless about it and would often leave his matches and sit at home.

His father understood his child's condition very well and was trying to make him understand. One day when Raju was acting lazy, his father came and started telling him about his goal of becoming a cricketer. He said – "Son, you have to understand that the thoughts in your mind are useless to others. In this world only your work is remembered and that only gives you recognition. What matters is what you do and what you achieve, not what you just think or believe.

If you want everyone to recognize you for your cricketing skills, you will have to work for it." This short conversation completely changed Raju's mind. He started practicing hard and very soon he got selected for the interstate competition. He was very happy and thanked his father profusely for his guidance and support. His father blessed him and said, always remember that when your words and actions will be same only then you will get success.

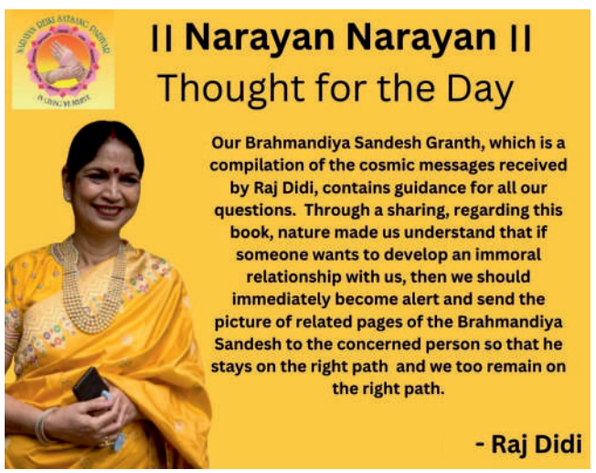

॥ 卐 ॥

# One Mistake

There lived a very clever old man in a village. He spoke very politely to the poor and the weak in their presence but behind their back he started cursing them and talking foul about them. When no one was watching him, he would even misbehave with them, thinking what harm it would do to him. Especially he used to make fun of and insult physically disabled people. Everyone in the village knew about the old man's bad habits and hence stayed away from him, but anyone who met him for the first time was impressed by his humble nature.

One day, it so happened that the village committee started looking for an old man who could manage a school established for special children. The salary was attractive, and the old man was confident that the committee would recommend his name as he was the humblest person in the village.

But to the old man's surprise, the committee not only did not consider his name but also rejected his name completely. The old man asked the committee chairperson why he was refused, to which the chairperson replied – You think you are very polite and considerate of people with disabilities, but that is just your misconception. You may be speaking well about them to others, but the entire village knows about your insults and disrespectful actions towards them. Your actions probably speak louder than your words. The old man became ashamed and went back from there.

He thought a lot and started improving himself. Now he did what he was told. Within a few days, he regained his lost respect by improving his words and actions.

**Narayan divine blessings with Narayan shakti to Vinod Rathi on her birthday (14th April ) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.**

**Narayan divine blessings with Narayan shakti to Vinod Rathi andNamratha Rathion their anniversary (20th April ) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.**

## Panditji

Once a Pandit ji boarded the bus. He paid the money to the conductor and took the ticket. The conductor mistakenly gave him the balance of Rs 20 instead of Rs 10 . Pandit ji understood that this happened by mistake, but greed came in his mind that the extra money given is the conductor's mistake, so why should I refuse it?

During the entire journey, there was a conflict going on in his mind whether it was right to do this or not. At last, when the conductor called out, Panditji, your stop had arrived, he could not control himself and silently took out 10 rupees from his pocket and handed it over to the conductor. While giving the money, he told the conductor to do his work carefully and said, "you had given me Rs 10 more by mistake." Then the conductor smiled and said that I did this deliberately. Pandit ji was shocked to hear what he said and asked why did you do so?

Then he said that I have heard a lot about you and that the lives of many people have improved after listening to your sermons. You advise everyone to follow the right path, not be greedy for money and do good deeds. I wanted to know if there was a difference between your words and actions. But by returning the money you have given proof that there is complete consistency between your words and actions.

While getting down from the bus, Pandit ji thanked God and said, O Lord, I am thankful to you that you took care of me at the right time, otherwise my character would have been tainted due to the greed of just Rs 10.

That is why it is said that you must listen to the voice of your inner soul before doing anything wrong, it definitely warns you once.

Always maintain uniformity in your actions and words.

**Narayan divine blessings with Narayan shakti to Sushma Taparia on her birthday (30th April) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.**

# GOLDEN SIX

**1) Prayer -**Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

**2) Energize Vaults -** Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

**3) Shanti Kalash Meditation –** Visualize a Shanti Kalash ( Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

**4) Value Addition -** Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

**5) Energize Dining Table/ Office table -** Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

**6) Sun Rays Meditation -** Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

# Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN . STAY EVERGREEN

**Our Hotels :** Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com